सुविचार- अगर आप दूसरों के बारे में भी सोचते हैं तो आप सच्चे इंसान हैं.

कहानी

जादुई पेड़ ने बदल दी गांव की किस्मत

एक समय की बात है, एक छोटे से गांव में सोनू नाम का लड़का रहता था. सोनू बहुत गरीब था, लेकिन उसका दिल बहुत बड़ा था. वह हमेशा दूसरों की मदद करता था. गांव में कोई बूढ़ा सड़क पार कर रहा हो, किसी का सामान गिर जाए या किसी को पानी चाहिए हो, सोनू तुरंत मदद के लिए पहुंच जाता था. उसकी मां हमेशा कहती थीं, 'बेटा, अच्छे काम का फल एक दिन जरूर मिलता है.' सोनू यह बात हमेशा याद रखता था.

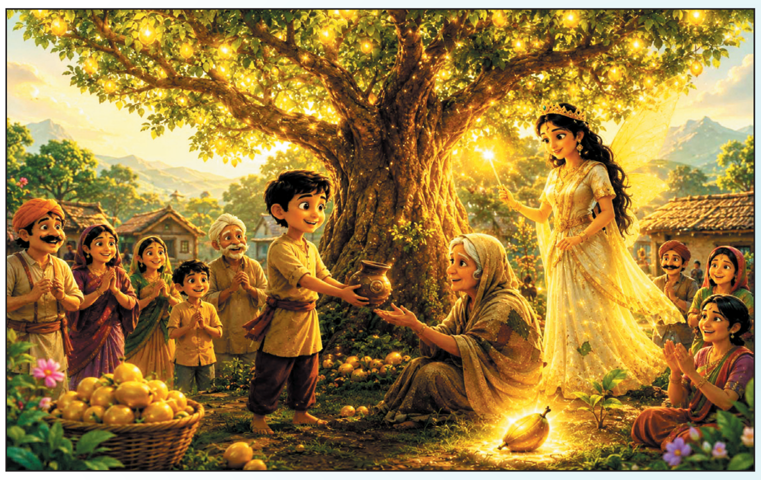

गांव के पास एक घना जंगल था. लोग कहते थे कि उस जंगल में एक रहस्यमयी पेड़ है, जो सिर्फ अच्छे दिल वाले इंसान को दिखाई देता है. लेकिन किसी ने उस पेड़ को कभी नहीं देखा था. एक दिन सोनू लकड़ियां लेने जंगल गया. चलते-चलते वह रास्ता भटक गया. शाम होने लगी और जंगल में अंधेरा छाने लगा. सोनू डर गया, लेकिन उसने हिम्मत नहीं छोड़ी.

तभी उसे दूर एक हल्की सुनहरी रोशनी दिखाई दी. वह धीरे-धीरे उस तरफ बढ़ा. वहां पहुंचकर उसने देखा कि एक बहुत बड़ा पेड़ चमक रहा था. उसकी पत्तियां सोने की तरह चमक रही थीं और उसके नीचे एक बूढ़ी औरत बैठी थी. बूढ़ी औरत बहुत कमजोर लग रही थी. उसने सोनू से कहा, 'बेटा, मुझे बहुत प्यास लगी है. क्या तुम मुझे थोड़ा पानी दोगे?'

सोनू के पास सिर्फ एक छोटी बोतल थी, जिसमें थोड़ा-सा पानी बचा था. वह खुद भी प्यासा था, लेकिन उसने बिना सोचे अपनी पूरी बोतल बूढ़ी औरत को दे दी. बूढ़ी औरत मुस्कुराई. अचानक चारों तरफ तेज रोशनी फैल गई. बूढ़ी औरत एक परी में बदल गई.

परी बोली, 'सोनू, मैं तुम्हारी अच्छाई की परीक्षा ले रही थी. तुमने अपनी जरूरत से पहले किसी और की मदद की. इसलिए मैं तुम्हें एक वरदान देती हूं.'

परी ने सोनू को एक छोटा-सा बीज दिया और कहा, 'इसे अपने घर के पास लगा देना. लेकिन याद रखना, इसे सिर्फ मेहनत और ईमानदारी के पानी से सींचना.'

सोनू घर लौट आया और उसने वह बीज अपने आंगन में लगा दिया. वह रोज उसे पानी देता, उसकी देखभाल करता. कुछ दिनों बाद वहां एक सुंदर पेड़ उग आया. उस पेड़ पर मीठे फल लगते थे. खास बात यह थी कि जो भी वह फल खाता, उसकी बीमारी दूर हो जाती और उसके मन में अच्छे विचार आने लगते. धीरे-धीरे दूर-दूर से लोग उस पेड़ के फल लेने आने लगे. गांव के बीमार लोग ठीक होने लगे. गांव में लड़ाई-झगड़े कम हो गए. लोग एक-दूसरे की मदद करने लगे. सोनू ने कभी उन फलों के बदले पैसे नहीं मांगे. वह कहता, 'अगर भगवान ने हमें कुछ अच्छा दिया है, तो उसे दूसरों के साथ बांटना चाहिए.'

गांव में ही मोहन नाम का एक लालची आदमी रहता था. उसने सोचा कि अगर यह पेड़ उसके पास होता, तो वह बहुत अमीर बन जाता. एक रात वह चुपके से पेड़ के सारे फल तोड़ने पहुंच गया. लेकिन जैसे ही उसने पेड़ को छुआ, पेड़ की सारी शाखाएं कांपने लगीं और उसके हाथ कांटों से भर गए. मोहन दर्द से चिल्लाने लगा. तभी पेड़ से आवाज आई, 'यह पेड़ सिर्फ अच्छे दिल वालों के लिए है. लालच और बुराई यहां टिक नहीं सकती.'

मोहन को अपनी गलती का एहसास हुआ. अगले दिन उसने सोनू से माफी मांगी. सोनू ने उसे माफ कर दिया और कहा, 'अगर इंसान अपनी गलती मान ले, तो वह फिर से अच्छा बन सकता है.'

उस दिन के बाद मोहन भी गांव वालों की मदद करने लगा. धीरे-धीरे पूरा गांव खुशहाल हो गया. लोग सोनू की अच्छाई की मिसाल देने लगे. बच्चे भी उससे सीखने लगे कि असली खुशी दूसरों की मदद करने में होती है.

सीख

अच्छाई और निस्वार्थ मदद का फल हमेशा मीठा होता है.

अंतर ढूंढो

नीचे दिये गये दोनों चित्र देखने में समान हैं लेकिन उनमें कुछ अंतर हैं जिन्हें आप ढूंढकर निकालें.

उत्तर :- 1. खिड़की के फूल का रंग अलग है, 2. बल्ब के पास मधुमक्खी और गिनती अलग हैं, 3. किताबों की संख्या अलग है, 4. कुर्सी की स्थिति बदली हुई है, 5. खिलौने की जगह अलग है.

भूल भुलैया

बूझो तो जानें

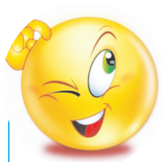

- मैं उड़ता हूं आसमान में, पर पक्षी नहीं कहलाता. लोगों को दूर देश पहुंचाऊं, बताओ मैं कौन कहलाता?

  उत्तर - हवाई जहाज

- न आंखें हैं, न कान हैं, फिर भी सबको खबर सुनाता, घर-घर में मैं पाया जाता, बताओ कौन कहलाता?

  उत्तर - रेडियो

- मैं बिना पैरों के चलता हूं, बिना मुंह के बातें करता. दूर बैठे लोगों को जोड़ूं, बताओ मैं क्या करता?

  उत्तर- मोबाइल फोन

- सुबह निकलूं, शाम को छिप जाऊं, दुनिया भर में रोशनी फैलाऊं.गरमी देकर जीवन देता, बताओ मैं कौन कहलाऊं?

  उत्तर- सूरज

- काला हूं पर कौवा नहीं,लंबी मेरी पूंछ. जहां चलूं वहां धुआं उड़ाऊं, बताओ मैं कौन?

  उत्तर - रेलगाड़ी

- पानी में रहता हूं, पर मछली नहीं कहलाता, पीठ पर घर लेकर चलता, धीरे-धीरे आगे बढ़ जाता.

  उत्तर- कछुआ

- मेरे पास चाबियां बहुत, लेकिन ताले खोल न पाऊं. उंगलियों से मुझे दबाओ, मीठे गीत मैं सुनाऊं.

  उत्तर- पियानो

- मुझे पीते हैं बच्चे, दांत बनते मजबूत.

  उत्तर- दूध

- कटने पर खुशबू फैलती, खाना बनाने में काम आता हूँ.

  उत्तर- प्याज

- मुझे खोलो, अंदर लाल दाने, मीठा और रस वाला.

  उत्तर- अनार

जानकारी

पेड़-पौधे धरती की अनमोल धरोहर

पेड़-पौधे प्रकृति का सबसे सुंदर और अनमोल उपहार हैं. इनके बिना पृथ्वी पर जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती. पेड़ हमें शुद्ध हवा, फल, फूल, लकड़ी और औषधियां प्रदान करते हैं. वे वातावरण को संतुलित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं. बढ़ते प्रदूषण और गर्मी के दौर में पेड़ों का महत्व और भी अधिक बढ़ गया है.

पेड़-पौधे न केवल इंसानों के लिए, बल्कि पशु-पक्षियों के लिए भी जीवन का आधार हैं. पक्षी पेड़ों पर अपने घोंसले बनाते हैं और कई जीव-जंतु इन्हीं पर निर्भर रहते हैं. पेड़ बारिश लाने में मदद करते हैं और मिट्टी को कटने से बचाते हैं. जहां अधिक पेड़ होते हैं, वहां का वातावरण ठंडा और स्वच्छ रहता है.

आज तेजी से हो रही कटाई के कारण जंगल कम होते जा रहे हैं. इसका असर मौसम और पर्यावरण पर साफ दिखाई दे रहा है. गर्मी बढ़ रही है, बारिश का संतुलन बिगड़ रहा है और प्रदूषण लगातार बढ़ता जा रहा है. इसलिए हर व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह अधिक से अधिक पेड़ लगाए और उनकी देखभाल करे. स्कूलों और समाज में बच्चों को भी पेड़ों का महत्व समझाना जरूरी है. अगर आज हम प्रकृति की रक्षा करेंगे, तभी आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ और सुरक्षित वातावरण मिल सकेगा. एक पेड़ कई लोगों को जीवनभर ऑक्सीजन देता है, इसलिए पेड़ लगाना सबसे बड़ा पुण्य माना जाता है. पेड़-पौधे हमें यह संदेश देते हैं कि दूसरों को देने में ही असली खुशी है. वे बिना किसी स्वार्थ के पूरी दुनिया को जीवन देते हैं.

चांद के रहस्यमयी रोचक तथ्य जानिए

इ हमेशा से इंसानों के लिए आकर्षण और रहस्य का विषय रहा है. रात के अंधेरे आसमान में चमकता चांद न केवल सुंदर दिखाई देता है, बल्कि इसके पीछे कई रोचक और अनोखे रहस्य भी छिपे हुए हैं. वैज्ञानिक वर्षों से चांद के बारे में नई-नई जानकारियां खोज रहे हैं.

चांद पृथ्वी का एकमात्र प्राकृतिक उपग्रह है. यह पृथ्वी से लगभग 3 लाख 84 हजार किलोमीटर दूर स्थित है. चांद की रोशनी असल में उसकी अपनी नहीं होती, बल्कि वह सूर्य की रोशनी को परावर्तित करता है. यही कारण है कि

चांद रात में चमकता दिखाई देता है.

समुद्र में आने वाले ज्वार-भाटे भी चांद की गुरुत्वाकर्षण शक्ति के कारण होते हैं. अगर चांद न होता, तो पृथ्वी पर मौसम और दिन-रात का संतुलन काफी अलग हो सकता था. चांद पर हवा और सामान्य पानी नहीं है, इसलिए वहां इंसान बिना विशेष स्पेस सूट के जीवित नहीं रह सकता. चांद से जुड़ा सबसे बड़ा रहस्य यह है कि उसका केवल एक ही हिस्सा हमेशा पृथ्वी से दिखाई देता है. दूसरा हिस्सा लंबे समय तक दुनिया से छिपा रहा. इसे चांद का अंधेरा भाग कहा जाता है. वैज्ञानिकों ने बाद में अंतरिक्ष यानों की मदद से इसकी तस्वीरें लीं. साल 1969 में पहली बार इंसान ने चांद पर कदम रखा था. अमेरिकी अंतरिक्ष यात्री नील आर्मस्ट्रांग चांद पर पहुंचने वाले पहले व्यक्ति बने. उनके इस मिशन ने पूरी दुनिया को हैरान कर दिया था.

कविता

प्यारी रंगीन तितली रानी

रंग-बिरंगी प्यारी तितली,
फूलों पर वह जाती है.
धीरे-धीरे पंख हिलाकर,
सबके मन को भाती है.

लाल, गुलाबी, पीले पंख,
सुंदर उसकी चाल है.
बगीचे में उड़ती रहती,
जैसे कोई जादू कमाल है.

बच्चे उसको पकड़ न पाते,
वह फुर्र से उड़ जाती है.
मीठी-मीठी धूप में तितली,
सबको खूब हंसाती है.

हंसी-ठिठोली

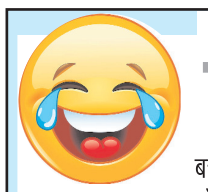

- टीचर : बताओ बच्चों, अगर मैं तुम्हें 10 चॉकलेट दूं और उसमें से 2 वापस ले लूं, तो तुम्हारे पास कितनी चॉकलेट बचेंगी?

सभी बच्चे जल्दी-जल्दी हिसाब लगाने लगे. तभी चिंटू आराम से खड़ा हुआ और बोला,
'सर, 10 ही रहेंगी!'
टीचर ने हैरानी से पूछा,
'अरे! वो कैसे?'
चिंटू बोला,
'सर, मैं आपको वापस ही नहीं दूंगा!'
पूरी क्लास जोर-जोर से हंसने लगी.

- टीचर ने मुस्कुराते हुए कहा,

'बहुत शरारती हो गए हो तुम!'
चिंटू बोला, 'सर, मम्मी कहती हैं अपनी चीजें किसी को नहीं देनी चाहिए!'
टीचर ने सोचा कि आज इसे मुश्किल सवाल पूछते हैं.
उन्होंने पूछा,
'अच्छा ये बताओ, अगर तुम्हारे पास 5 सेब हों और 5 दोस्त आ जाएं, तो तुम क्या करोगे?'
चिंटू तुरंत बोला, 'सर, मैं जल्दी से सेब खा लूंगा!'
टीचर ने माथा पकड़ लिया और बोले,
'दोस्तों के साथ बांटना चाहिए!'
चिंटू मुस्कुराकर बोला,
'सर, पिछले बार मैंने बांटे थे... तब मुझे सिर्फ छिलका मिला था!'

प्रेरक प्रसंग

गरीबी से महान लेखक बने प्रेमचंद

मुंशी प्रेमचंद हिंदी साहित्य के ऐसे महान लेखक थे, जिन्होंने अपनी कहानियों और उपन्यासों के जरिए समाज की सच्चाई को लोगों के सामने रखा. उनका असली नाम धनपत राय श्रीवास्तव था, लेकिन दुनिया उन्हें प्रेमचंद के नाम से जानती है. उनका जन्म 31 जुलाई 1880 को उत्तर प्रदेश के वाराणसी के पास लमही गांव में हुआ था. बचपन से ही उनका जीवन कठिनाइयों से भरा रहा. छोटी उम्र में ही उनकी माता का निधन हो गया और परिवार की आर्थिक स्थिति भी बहुत कमजोर थी. इन मुश्किलों के बावजूद उन्होंने पढ़ाई नहीं छोड़ी.

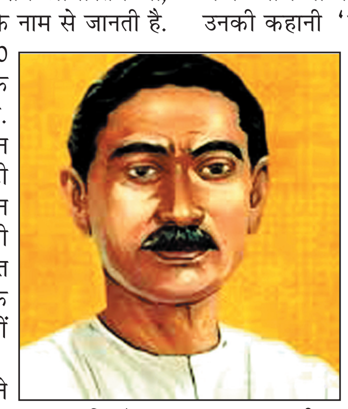

प्रेमचंद को किताबें पढ़ने का बहुत शौक था. वे घंटों बैठकर कहानियां पढ़ा करते थे. गरीबी के कारण उन्हें कम उम्र में ही नौकरी करनी पड़ी, लेकिन उन्होंने अपने सपनों को कभी टूटने नहीं दिया. शिक्षक की नौकरी करते हुए भी वे लगातार लिखते रहे. धीरे-धीरे उनकी कहानियां लोगों के बीच लोकप्रिय होने लगीं.

उनकी रचनाओं में गांव, किसान, मजदूर, गरीब और समाज के दुख-दर्द साफ दिखाई देते हैं. उन्होंने हमेशा सच्चाई और इंसानियत का साथ दिया. उनकी प्रसिद्ध कहानियों में 'ईदगाह', 'पंच परमेश्वर', 'दो बैलों की कथा' और 'बड़े घर की बेटी' आज भी बच्चों और बड़ों को सीख देती हैं. उनकी कहानी 'ईदगाह' का छोटा बच्चा हामिद अपनी दादी के लिए चिमटा खरीदकर त्याग और प्रेम की मिसाल पेश करता है.

प्रेमचंद सिर्फ लेखक ही नहीं, बल्कि समाज को नई दिशा देने वाले विचारक भी थे. वे मानते थे कि शिक्षा और अच्छे विचारों से समाज बदला जा सकता है. उन्होंने अपनी लेखनी को कभी पैसे कमाने का साधन नहीं बनाया, बल्कि समाज की आवाज बनाया.

उनका जीवन बच्चों को यह सीख देता है कि कठिन परिस्थितियों में भी मेहनत और लगन से बड़े सपने पूरे किए जा सकते हैं. गरीबी और संघर्ष के बावजूद प्रेमचंद ने हार नहीं मानी और हिंदी साहित्य के सबसे बड़े लेखकों में अपना नाम दर्ज कराया.

आज भी उनकी कहानियां स्कूलों में पढ़ाई जाती हैं और बच्चों को सच्चाई, ईमानदारी, मेहनत और इंसानियत का महत्व सिखाती हैं.

बिंदु मिलाओ

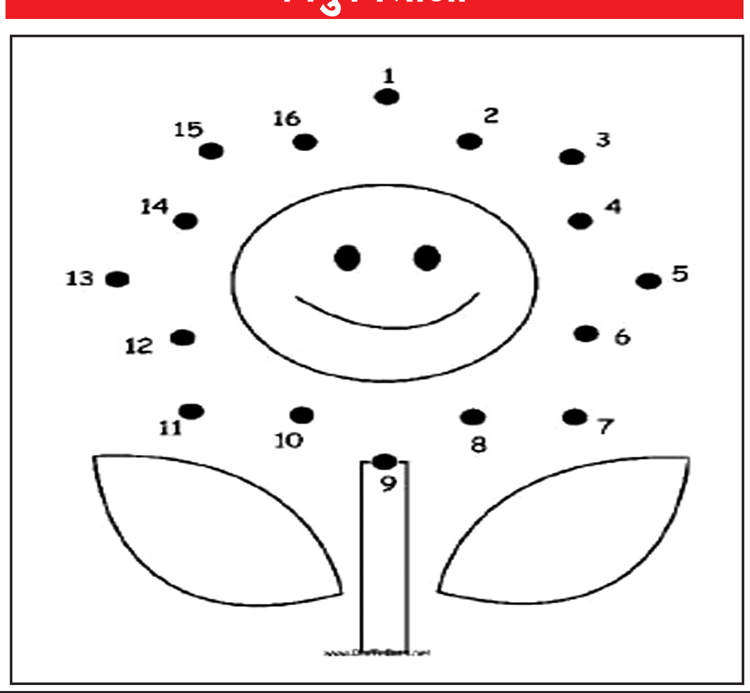

रंग भरो

बच्चों अपनी कहानियां, कविताएं, पेंटिंग्स , लेख, रचनाएं आदि bhopalnav@gmail.com **पर मेल करें .**